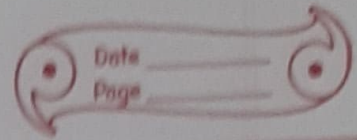


CH-3 (HOME WORK)

कर्ण का मित्र - प्रेम



शब्दार्थ :-

गुणना - मूल्यांकन, निचाह करना

संगठ - संगठ, प्रेम

रुहणी - कर्णदार

सौम - चंद्र

सुरपुर - स्वर्ग

तय - वृक्ष, पंड

कुलार - कुलहाडी

अनमोल - अमूल्य

रत्न - रत्न

विशान - हस्ती, शक्ति, सामर्थ्य

न्यायवाचक - अपिनि, कुर्वनि

नर - पुरुष

घाट - छाँव

वार - प्रहार

कुरुपनि - कुरुवंश के स्वामी अर्थात् दुर्योधन